पेरिस
मार्च ८, २००६

सन्देश संख्या १६२

नम्रता सीखें तथाकथित शक्तिशाली देश

विराट् समुद्र अपनी महानता के बावजूद, नीचे पड़े होते हैं ताकि सभी नदियाँ उनमें समाहित हो सकें । नीचे पड़े होने जैसी बात समुद्र को विचलित नहीं करती। नदियों की अपार जल राशि अनवरत समुद्र में गिरती रहती है, फिर भी उसका जल स्तर एक इंच भी नहीं बढ़ता । एक बात यह भी कि समुद्र से लगातार अपार जल–राशि वाष्प में परिवर्तित होकर उड़ रही है । इससे बादल बन रहें हैं, वर्षा हो रही है और पुनः नदियाँ जल से भर रही हैं । इस तरह समुद्र द्वारा उदारतापूर्वक नदियों की सहायता की जाती है किन्तु उससे उसे कोई क्षति नहीं होती । उससे उसका जल–स्तर एक इंच भी कम नहीं होता। यह सब सर्वव्यापक चैतन्य की व्यवस्था के अनुसार स्वाभाविक रूप से चलता रहता है।

यदि बड़े एवं शक्तिशाली देश, जैसे कि अमेरिका, रूस आदि विराट् समुद्रों की तरह विनम्रता में एवं झुककर रहना सीख जाएँ, दूसरों को अपने कब्जा में करने, प्रभुत्व दिखाने, नियन्त्रणाधीन करने, शोषण करने, यातना देने आदि का प्रयास न करें, तब छोटे–छोटे देश स्वतः ही बड़े देशों के प्रति झुक जायेंगे और उनकी बात मानने लगेंगे । बड़े देशों द्वारा छोटे देशों की सहायता करने पर उनमें संसाधनों में कमी भी नहीं आएगी । किन्तु बड़े देशों की व्यवस्था भी इच्छा, भय, अभिमान, स्वार्थ आदि से युक्त क्षुद्र मन वाले ही चलाते हैं जो इस वास्तविकता को कभी समझ नहीं पाते और इसीलिए वे द्वन्द्व, युद्ध, हत्या से पूर्ण एक भयावह विश्व के निर्माण में व्यस्त हैं ।

किंवदन्ती कहती है : जीसस सैबध–दिवस पर प्रार्थना के लिए जा रहे थे। परम्परा के अनुसार यह मान्यता है कि उस दिन कोई काम नहीं किया जाता, केवल प्रार्थना की जाती है क्योंकि ईश्वर भी सैबध के दौरान काम करना बन्द कर देते हैं । रास्ते में उन्हें एक अन्धा व्यक्ति मिला जो सहायता की याचना रहा था । किन्तु कोई भी उसकी मदद नहीं कर रहा था क्योंकि सभी पूजा–स्थल पहुँचने की जल्दी में थे । फिर भी, जीसस रुक गए और उस व्यक्ति को बड़े स्नेह से उठाया । चमत्कारिक रूप से, उसका अन्धापन ठीक हो गया । किन्तु, इस पर पुरोहित क्रोधित हो गया और जीसस को सैबथ के नियम को भंग करने के कारण डाँटा । उसके बाद, जीसस के मुख से यह गम्भीर वाणी निकली – ''सैबथ मनुष्य के लिए है न कि मनुष्य सैबथ के लिए''।

सांख्य, योग और वेदान्त की प्राचीन प्रज्ञा से प्रवाहित समझदारी की ऊर्जा के माध्यम से एक व्यक्ति मनुष्य की चित्तवृत्ति में विद्यमान भ्रामक द्वैत के अन्धकार को दूर कर रहा था किन्तु एक बड़े देश की पुलिस (पुरोहित के स्थान पर) ने उस गुरू को परेशान किया तथा उसके मंगल कार्य को अपने देश में होने से रोक दिया । वह भूल गया कि कानून लोगों की सुरक्षा के लिए होते हैं न कि उनका विनाश करने के लिए ।

उधारी जानकारी से अनुभव प्राप्त करना – प्रज्ञा का तरीका नहीं होता । अनुभव तभी प्राप्त होता है जब अतीत पुनर्जीवित होता है किन्तु वह पुनः अतीत हो जाता है । अनुभव मानसिक छवियों का सूचना में परिवर्तन है और ये छवियाँ पहले से ही पंजीकृत होती हैं । 'आध्यात्मिक अनुभव' के बारे में बोलना या लिखना घृणित है । यह परम पवित्र को अपवित्र करना है । यह समय की विडम्बना है ।

वह असीम कालातीत होने अर्थात् अनुबन्धनों के बोझ से मुक्त होने पर आता है । 'प्रेम' या 'असीम' शुद्ध, एकाकी और अभेद्य हैं । यदि तुम्हें प्रेम की जानकारी है तो वह प्रेम नहीं होगा । प्रेम तरस या दया नहीं है । यह किसी सम्बन्ध को स्वीकार करना भी नहीं है जिसमें विभेदकारी चित्त ''मैं'' की गतिविधियों में लगातार समायोजन चलता रहता है ।

पुनः वह अविश्वसनीय असीम यहाँ है, जिससे इस मध्य–रात्रि में आकाश स्वर्ग और धरती भरी हुई है । वह तुम्हारा नहीं है जिसे रख सकते हो या छोड़ सकते हो । वह अभी यहीं है ।

।। जय यहाँ ।।